नया ज्ञानोदय

फरवरी-मार्च 2026
मूल्य : 50 रुपये

भारतीय ज्ञानपीठ

भारतीय ज्ञानपीठ

संस्थापक

श्रीमती रमा जैन
श्री साहू शांति प्रसाद जैन

नया ज्ञानोदय

साहित्य, समाज, संस्कृति और कलाओं पर केंद्रित

अंकः 237
फरवरी–मार्च 2026

सम्पादक
मधुसूदन आनन्द

सह-सम्पादक
महेश्वर, प्रभाकिरण जैन

साहू अखिलेश जैन
प्रबन्ध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ

प्रकाशकः भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड,
नई दिल्ली-110 003
फोनः 011-2462 6467, 2469 8417, 4152 3423
ई-मेलः nayagyanoday@gmail.com,
bookclub@jnanpith.net,
gmbharatiyajnanpith@gmail.com

वेबसाइटः www.jnanpith.net

Naya Gyanodaya
A Literary Bi-monthly Magazine
Editor: Madhu Sudan Anand
Language: Hindi
Published by **Bharatiya Jnanpith**
18, Institutional Area, Lodi Road,
New Delhi-110 003

मूल्यः
50 रुपये + 16 रुपये (डाक खर्च)

व्यक्तियों/संस्थाओं के लिए:
वार्षिक (6 अंक): 400 रुपये (डाक खर्च सहित, साधारण डाक से)
वार्षिक (6 अंक): 730 रुपये (डाक खर्च सहित, रजिस्टर्ड डाक से)

नया ज्ञानोदय की ई-प्रति www.notnul.com पर उपलब्ध है।

शुल्क 'भारतीय ज्ञानपीठ' (**Bharatiya Jnanpith**) के नाम से, उपर्युक्त पते पर चेक या बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से भेजें।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से भारतीय ज्ञानपीठ का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

आवरण व साज-सज्जाः महेश्वर, भीतरी रेखांकनः संदीप राशिनकर

www.jnanpith.net

धीरेंद्र अस्थाना के कथा-उत्सव में जुटे देशभर के कथाकार

मुंबई के सुदूर उपनगर मीरा रोड में रविवार की शाम एक अनूठा साहित्यिक उत्सव आयोजित हुआ, जिसमें प्रसिद्ध हिंदी कथाकार धीरेंद्र अस्थाना के 70वें जन्मदिन के अवसर पर उनकी प्रतिनिधि कहानियों पर केंद्रित चर्चा हुई। विरंगुला केंद्र में हुए इस 'कथा-उत्सव' में देशभर से आए कथाकारों, साहित्यकारों और मुंबई की साहित्यिक-सांस्कृतिक हस्तियों ने अभूतपूर्व संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम ने हिंदी कहानी की परंपरा को नई जीवंतता प्रदान की और धीरेंद्र अस्थाना के लेखन की बहुआयामी विशेषताओं को रेखांकित किया।

यह उत्सव धीरेंद्र अस्थाना के साहित्यिक योगदान को सम्मानित करने का एक विशेष माध्यम बना। उनके जन्मदिन पर आधार प्रकाशन से हाल ही में प्रकाशित पुस्तक 'धीरेंद्र अस्थानाः प्रतिनिधि कहानियां' का विमोचन और चर्चा मुख्य आकर्षण रहा। इस पुस्तक का संपादन भुवेंद्र त्यागी ने किया है, जिन्होंने कार्यक्रम में अपनी भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि यह संग्रह धीरेंद्र जी की चुनिंदा रचनाओं को एकत्रित कर उनके साहित्यिक सफ़र को समेटता है।

कार्यक्रम की शुरुआत स्वरसंगम फाउंडेशन द्वारा धीरेंद्र अस्थाना और उनकी पत्नी ललिता अस्थाना के सम्मान से हुई। फिरोज खान ने प्रस्तावना रखी, जबकि रमन मिश्र कार्यक्रम के सूत्रधार रहे। हृदयेश मयंक ने सभी अतिथियों और उपस्थितजनों का आभार व्यक्त किया।

वरिष्ठ कथाकारों और आलोचकों ने धीरेंद्र अस्थाना के लेखन की विभिन्न परतों पर प्रकाश डाला। हरि मृदुल ने अपने आलेख में कहा कि धीरेंद्र जी का अंदाजे-बयां पूरी तरह अलहदा है, जो उन्हें अन्य कथाकारों से अलग करता है। युनुस खान ने धीरेंद्र अस्थाना पर आधारित एक प्रभावशाली ऑडियो डॉक्यूमेंट्री प्रस्तुत की, जिसने दर्शकों को उनके जीवन और रचनाओं से गहराई से जोड़ा।

विशेष रूप से वरिष्ठ कवि राजेश जोशी का इस कार्यक्रम में उपस्थित होना एक महत्वपूर्ण आकर्षण रहा। मुंबई के साहित्य जगत की कई विशिष्ट हस्तियाँ भी मौजूद रहीं, जिन्होंने धीरेंद्र अस्थाना के साहित्य को विभिन्न दृष्टिकोणों से सराहा।

कार्यक्रम में विभिन्न कथाकारों ने धीरेंद्र अस्थाना की रचनाओं पर अपनी प्रतिक्रियाएं साझा कीं। विश्वनाथ सचदेव ने कहा, "धीरेंद्र अस्थाना की रचनाओं को सिर्फ पढ़ा नहीं, जिया जाता है।" प्रेम जनमेजय ने उनके लेखन के अनदेखे पक्ष पर जोर देते हुए कहा कि "धीरेंद्र जी अपनी कहानियों में व्यंग्य को बहुत बारीकी से बुनते हैं।" हृषीकेश सुलभ ने उनकी कहानियों की काव्यात्मकता की प्रशंसा की, "उनकी कहानियाँ कविताओं तक पहुँचती हैं। उनमें एक काव्यात्मक लय रहती है।"

योगेंद्र आहूजा ने उन्हें "चलती-फिरती किताब" करार दिया और कहा, "धीरेंद्र मेरे लिए एक चलती-फिरती किताब हैं और उनकी कहानियां जिंदा मुँह हैं, जो सांस लेती हैं।" गीताश्री ने जोर देकर कहा कि "धीरेंद्र अस्थाना की कहानियों में कल्पना नहीं, बल्कि जीवन की सच्चाई प्रतिबिंबित होती है।" मनोज रूपड़ा ने उन्हें "जीवन दृष्टि का कलाकार" बताया, जबकि अविनाश दास ने उनकी कहानियों को "डार्क ज़ोन की कहानियाँ" कहते हुए कहा कि इनमें लेखक ही नहीं, बल्कि कवि, बुद्धिजीवी-पत्रकार, कारीगर और मजदूर भी मौजूद होते हैं। अणुशक्ति सिंह ने नारी विमर्श पर प्रकाश डालते हुए कहा कि "धीरेंद्र अस्थाना की कहानियों में नारी के गरिमामय पक्ष को प्रमुखता से उभारा गया है।" यतीश कुमार का बयान दिल को छू गया, "आम लोगों की साधारण कथा गहराई से लिख देने वाले का नाम धीरेंद्र अस्थाना है।" उन्होंने मुंबई में कोलकाता देखने जैसी अनुभूति व्यक्त की, जो कार्यक्रम की विविधता को दर्शाता है।

यह उत्सव हिंदी साहित्य में धीरेंद्र अस्थाना के योगदान को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने वाला साबित हुआ। उनके लेखन की गहराई, व्यंग्य, काव्यात्मकता, जीवन की सच्चाई और सामाजिक संवेदना ने सभी को प्रभावित किया। कार्यक्रम ने साहित्य प्रेमियों को एक मंच पर लाकर हिंदी कहानी की समृद्ध परंपरा को नई ऊर्जा प्रदान की। ऐसे आयोजन हिंदी साहित्य को जीवंत रखने और नई पीढ़ी से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रस्तुति : **भुवेंद्र त्यागी**

साहित्य, समाज, संस्कृति और
कलाओं पर केन्द्रित

अंकः 237
फरवरी-मार्च 2026
पृष्ठः 84 (आवरण सहित)

www.jnanpith.net

अनुक्रम

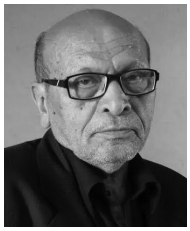
असग़र वजाहत

ममता कालिया

प्रियंवद

लीलाधर मंडलोई

उदय प्रकाश

मनोज रूपड़ा

स्मरण : ज्ञानरंजन
आग में फूल को याद करने का समय : लीलाधर मंडलोई 05
गुरु ज्ञानरंजन : रवीन्द्र त्रिपाठी 08

परिचर्चा
ज्ञानरंजन की कहानी सिर चढ़कर ज़ुबान की सवारी करती है 11
प्रियंवद, असग़र वजाहत, उदय प्रकाश व ममता कालिया
प्रस्तुति : प्रांजल धर

ज्ञानरंजन की कहानी
घंटा : ज्ञानरंजन 13
पिता : ज्ञानरंजन 19

स्मरण : विनोदकुमार शुक्ल
अपनी कविताओं की तरह सहज और सरल : रमेश अनुपम 23

स्मरण : मोहिनी माथुर
हौसला बढ़ाने वाली मां : प्रकाश दुबे 27

मुद्दा
साहित्य, संस्कृति, स्वायतत्ता और सवाल! : सुधांशु गुप्त 31

कहानी
सैर : शंकर 33
मिस्टेकन : शर्मिला जालान 38
आकृति : हरिनाथ मिश्र 43

उर्दू कहानी
कल रात हमारे घर मिर्ज़ा ग़ालिब
और इस्मत चुग़ताई आए थे : जिलानी बानो 47

लातीन अमेरिकी कहानी
बेबल की लाईब्रेरी : होर्खे लुई बोर्खेस 51

आलेख
दिनकरः प्रेम विवाह और समाज : सुधा सिंह 56
लोक और अभिजात्य का द्वन्द्व : मनोज रूपड़ा 61

कविता
कुमार अम्बुज 65
इब्बार रब्बी 67
नीतू गुजराल 68

पुस्तक समीक्षा
जीवन का साथ मृत्यु से दोस्तीः सुभाष राय 70
सेर्गेई आइसेन्स्टाइन : रमन 71
हमारे भीतर रूस को पुनर्जीवित करती है
'पूशकिन के देस में' ! : सुधांशु गुप्त 73
'साझापन' की कविताएं : रेखा श्रीवास्तव 76

ज्ञान गरिमा के 81 वर्ष
भारतीय ज्ञानपीठ

आग में फूल को याद करने का समय

लीलाधर मंडलोई

लीलाधर मंडलोई

(जन्मः 15 अक्टूबर 1953, गुढ़ी, छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश) हिंदी के प्रमुख समकालीन कवि, लेखक और संपादक हैं। उनकी रचनाओं में छत्तीसगढ़ की बोली की मिठास, जनजीवन, प्रकृति, श्रम और सामाजिक संवेदना प्रमुख है। प्रमुख कृतियाँः 'घर-घर घूमा', 'रात-बिरात', 'मगर एक आवाज़', 'काल बाँका तिरछा', 'मनवा बेपरवाह', 'भीजै दास कबीर', 'जलावतन' (कविता); 'अर्थ जल', 'कविता का तिर्यक' (आलोचना); 'दाना पानी', 'राग सतपुड़ा' (डायरी); 'काला पानी' (यात्रा-वृत्तांत)। उन्होंने 'नया ज्ञानोदय' का संपादन किया और वर्तमान में 'विश्वरंग' चला रहे हैं। मीडिया क्षेत्र में दूरदर्शन-प्रसार भारती से जुड़ाव।

मो. 9315305643

था इतना सख़्त जान कि तलवार बेअसर
था इतना नर्म दिल कि रगे गुल से कट गया
–शकेब जलाली

ज्ञानरंजन वक्त के दामन में एक शोला था और एक फूल हँसता हुआ। उसके साथ होने की शर्त में, आपका उनके इम्तिहान से गुज़रना निहायत ज़रूरी था। उनके अपने मानदंड थे। यूं तो 1976 में आकाशवाणी की नौकरी में आने के बाद, कुछ सालों तक बस दूर से दुआ-सलाम रही। उन दिनों जबलपुर, परसाई जी और ज्ञान जी की उपस्थिति से जाना जाता था। दोनों की सत्संग मंडली में दाख़िल होना बहोत कठिन था। 'पार्टनर तुम्हारी पॉलिटिक्स क्या है।' यह वाक्य तब एक जुमला न था। यह तब उनके परिसर में प्रवेश का प्राथमिक विचार द्वार था। मैं तब साहित्य समाज में उस तरह परिचित न था। आपातकाल में हमारी पीढ़ी का छिट-पुट लिखना शुरू हुआ था। 'लहर' में दो कविताएं शाया हुई थीं। दोनों खो गयीं और किसी संग्रह में न आ सकीं। एक कविता की शुरुआती दो-एक पंक्तियां चेतना में बची रह गयीं–'ऐ धरती! मैं तुम्हें एक बच्चे की तरह गोद में उठा/चूमना चाहता हूँ तुम्हारी दुखती रगें/न जाने कब से हमारे लिए घूमतीं/कितना थक गयी होगी तुम।'

ज्ञान जी के 763, अग्रवाल कालोनी वाले घर में सभी मैगज़ीन आती थीं। 'लहर' मेरे पास पहुंची न थी। मैं बिना किसी परिचय के उनके पते पर पहुँचा था। उनका नेटवर्क विराट था। साहित्य की हर बड़ी और छोटी मछली की ख़बर उन्हें रहा करती थी। मैं उन दिनों आकाशवाणी रायपुर में था। दरअसल वे साहित्य संसार के हिंद महासागर की तरह थे। मुलाक़ात संक्षिप्त थी। कविताएँ उनके संज्ञान में थीं। मैंने पत्रिका के लिए गुज़ारिश की। उन्होंने खोज कर देने का वादा किया। बात आई-गई हो गयी। मेरा जबलपुर जाना बना रहा। वहाँ मेरी शादी की बातचीत चल रही थी। मैं हर यात्रा में दीर्घ विलंबित स्वर की तरह मिलने की चेष्टा में रहता। फिर भी दूर-दूर का संपर्क बना जो दो-तीन अवसरों तक महदूद रहा। इस तरह लगभग छह साल बीत गये। 1982 में आकाशवाणी छतरपुर से तबादले पर आकाशवाणी जबलपुर आ गया। वहाँ साहित्य के कार्यक्रमों का दायित्व मिला। परामर्श के बहाने मिलता रहा। उनसे लिखवाने के लिए कई चक्कर लगाये। उन दिनों मैंने एक संस्मरण श्रृंखला की शुरुआत की। जिसमें परसाई, मुक्तिबोध और श्रीकांत वर्मा पर संस्मरण रिकॉर्ड कर चुके थे। दोनों दैनिक भास्कर के रविवारीय अंक में छपे। ये दोनों संस्मरण आकाशवाणी के लिए विरल हासिल की तरह थे। ज्ञान जी से मनुहार करता रहा और इंतज़ार के बाद इम्तिहान में पास होने के संकेत मिले। दो संस्मरण मिले। पहला उनके पिता रामनाथ सुमन और दूसरा बचपन के साथी, बांसुरी वादक हरिप्रसाद चौरसिया पर। दोनों में उनके गद्य वैभव का शिखर था।अब भी यह याद से जाता नहीं कि हरिप्रसाद थी को स्कूल बस्ते में बांसुरी लाने पर मास्टर द्वारा किस तरह पीटा जाता था और बांसुरी तोड़-तोड़ दी जाती

थी। इस तरह रेडियो पर बेहतर काम करते हुए,ज्ञान मंडली में मुझे दाख़िला मिला। बाद में 'पहल परिवार' का सदस्य होता गया। लेकिन बतौर लेखक नहीं, उसमें कुछ और साल लग गये। रायपुर से एक बार कविताएँ भेजने का साहस किया था और वे अस्वीकृत हो गयीं। उसके बाद यह साहस कभी जुटा न सका। जब उन्होंने कुछ माँगा दे दिया। शायद दो तीन बार। मैं बस पहल के लिए अघोषित भूमिका में बना रहा। जबलपुर के अलावा पातालकोट और अमरकंटक में पहल के महत्त्वपूर्ण आयोजन में अपनी भूमिका से संतोष हुआ और पहल सम्मान में भी बना रहा। सम्मान के संचालन का काम कुछ सालों तक किया। इस प्रक्रिया में आयोजन करने का हुनर हाथ लग गया। पहल निकलती रहे, इसके लिए प्रयास करने में छोटा-मोटा दायित्व निभाया लेकिन जितना करना था, कर नहीं पाया। यह दुख बना रहा और पत्रिका के बंद होने की घोषणा पर वह सबसे दारुण समय था। पहल मेरी तरह अनेक लोगों के लिए एक मिशन था। मैंने दूर से सही, उनके सत्संग में बहुत कुछ सीखा। आयोजन, संपादन, साहित्य समाज में रहने की सलाहियत, संचालन का हुनर आदि जिनसे मेरे वजूद को कुछ अनोखे रंग मिले।

इस यात्रा में कई लोग गुमनाम हैं। हमारी मंडली में एक हुआ करते थे सुखलाल पटेल। उनका घर सालों तक ज्ञान मंडली का केंद्र था। कई वरिष्ठ लेखक उसी के घर में रसरंजन के साथ चर्चा किया करते थे। लेखकों में नामवर सिंह, काशीनाथ सिंह, मंगलेश डबराल से लेकर लगभग वरिष्ठ लेखक जबलपुर आगमन पर, सुखलाल पटेल के मेहमान हुआ करते थे। मैंने और सुखलाल पटेल ने उसी घर में 'ज्ञान साहित्य घर' की स्थापना की। एक किताब की दुकान खोली जिसमें ज्ञान जी का सहयोग था और इसी 'ज्ञान साहित्य घर' से प्रायोगिक तौर पर कुछ प्रकाशन हुए। यह कम से कम मेरे जीवन का सुनहरा अध्याय था। मैं सारे नामचीन लेखकों से वहीं मिला। पोर्टब्लेयर तबादले पर जाने के बाद वह शीराजा बिखर गया। सपनों में वह आज भी आबाद है। सुखलाल खो गया। ढूंढने पर वह नहीं मिला। शहर में उसे कोई याद नहीं करता। पूछने पर पुराने साथी उस घर की महफ़िलों के 'लतमरुआ' (चखना) और दारु के दौर को ही अधिक याद करते हैं। वहीं 'मधुकलश' स्वीट्स-एक मशहूर दुकान थी। मेरा घर उसके नज़दीक था।

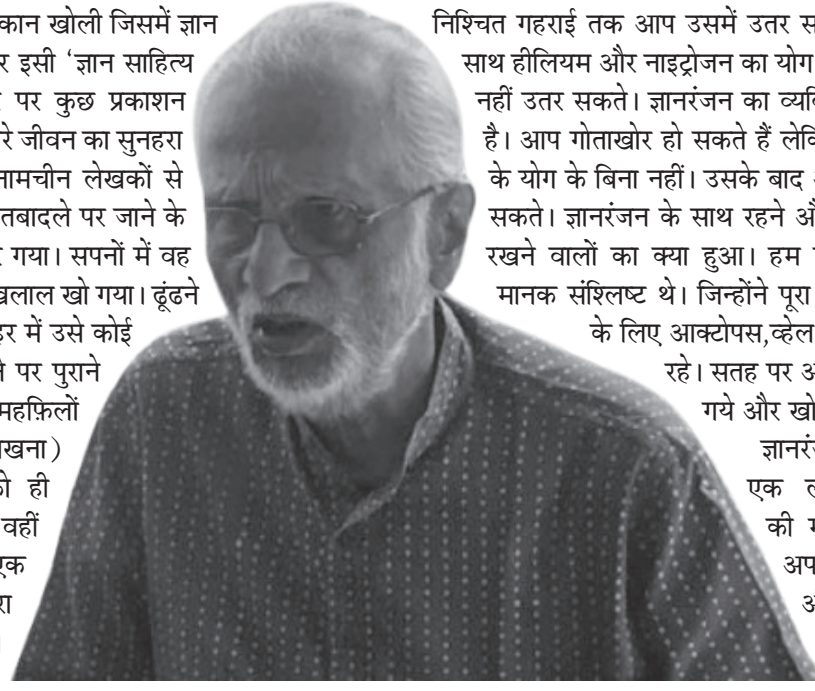

ज्ञान मंडली के लोग वहीं जुटते। मिठाइयों के एक से अधिक दौर चलते। मिठाइयों के आस्वाद पर ज्ञान जी को सुना और सौंदर्यबोध के इलाक़ों में प्रवेश किया। वे तब ठाकुरप्रसाद सिंह की 'पांच जोड़ बांसुरी' वाली कविता सुनाया करते थे। भेड़ाघाट में मैंने एक कथा गोष्ठी संगमरमर के प्राकृतिक मंच पर आयोजित की थी। गोष्ठी के बाद, वे कथा से दूर सिर्फ़ गीत गायन के मूड में थे।

जीवन में लय और संगीत के बारे में बोलते रहे।

वह हमारी मस्तियों के साथ बदमस्तियों का दौर था। तब ज्ञान उर्जा से भरपूर थे। सख़्त जान के साथ नर्म दिल। डांटते-डपटते और प्यार करते। कई नाटकों, प्रदर्शनियों और साहित्य के कार्यक्रमों की प्रारंभिक योजना उन्हीं ठियों पर बनती जहाँ वे साथ होते मसलन कॉफी हाउस और बाद में योजनाएँ आश्चर्य की तरह मूर्त होतीं। ज्ञानरंजन मानो कलाओं की नींव रख रहे थे, जो उनके जाने तक एक पूरा दरख़्त हो गया। अनेक परिंदों में, एक मैं था। जो उड़-उड़ कर ठिकाने बदलता रहा और लौटकर उसी पर बिना बताए लौटता रहा। जीवन में जितने आयोजन करने के अवसर मिले, उस प्राथमिक पाठशाला के पहले अध्यापक किसी न किसी रूप में ज्ञानरंजन थे, उनकी कला दृष्टि से, बाद में उभरे मेरे सभी इलाक़ों के लिए कुछ न कुछ चुराता रहा। ये चोरियाँ हसीन, दिलकश और गंभीर महत्व की बनी हुई हैं।

ज्ञानरंजन एक 'आइसबर्ग' थे। सबको उनका संसार देख पाने तक ही दिख पाता था। एक बटे नौ भाग। समुद्र में लगभग 10 मीटर तक प्रकाश पहुँचता है। उसके बाद गहराई का अन्धकार शुरु होता है। इसके बाद उसके रहस्य गहराते हैं। हर कोई उसे नाप नहीं सकता। उसका रंग और व्यवहार अबूझ होने लगता है। एक निश्चित गहराई तक आप उसमें उतर सकते हैं। ऑक्सीजन के साथ हीलियम और नाइट्रोजन का योग न हो तो आप गहराई में नहीं उतर सकते। ज्ञानरंजन का व्यक्तित्व कुछ ऐसा ही रहा है। आप गोताखोर हो सकते हैं लेकिन ऊपर के तीन तत्वों के योग के बिना नहीं। उसके बाद आप समुद्र में ठहर नहीं सकते। ज्ञानरंजन के साथ रहने और बस जाने के ख़याल रखने वालों का क्या हुआ। हम जानते हैं। सुपात्रता के मानक संश्लिष्ट थे। जिन्होंने पूरा किया वे उतनी अवधि के लिए आक्टोपस,व्हेल और शार्क की तरह भी रहे। सतह पर आते ही वे पहचान में आ गये और खो गये।

ज्ञानरंजन के साथ अपना एक लंबा साथ ऑक्सीज़न की मात्रा के अनुरूप रहा। अपना राग,अपनी सीमा और अपनी पात्रता। न कुछ लेना था। न